SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

"गोण्डा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि और सृजनात्मकता के सम्बन्ध का प्रभाव"

सौमित्र शुक्ल
शोधार्थी
शिक्षाशास्त्र विभाग

प्रो0 शिवम श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष–शिक्षाशास्त्र,
किसान डिग्री कॉलेज, बहराइच

1.1 प्रस्तावना :–

पूरे जीवन काल का 5वां भाग किशोरावस्था एक महत्त्वपूर्ण अवस्था हैं जो मानव जीवन में 11 वर्ष से प्रारंभ होकर 19 या 20 वर्ष तक की होती है। इस अवस्था को सामान्यत किशोरावस्था के नाम से जाना जाता हैं। शिक्षा स्वयं में जीवन है, अतः जीवन ही शिक्षा है। इसमें अन्तःक्रिया या पारस्परिक क्रिया निहित है जो प्रारम्भ में मनुष्य के लिए एक जैविक आवश्यकता के रूप में विकसित होती है और क्रमशः सामाजिक आवश्यकता अनौपचारिक आवश्यकता, औपचारिक आवश्यकता में परिवर्तित होते हुए उसे आधुनिक परिस्थितियों की ओर अग्रसर करती है, जिसका निर्माण अभी तक नहीं हुआ हो।

एडम्स ने शिक्षा को ज्ञानी एवं अज्ञानी के बीच लेन–देन की सुव्यवस्थित प्रक्रिया कहा है, तो जॉन डीवी (1859–1952) ने ज्ञानी एवं अज्ञानी के साथ वातावरण को जोड़ा जो आगे चल कर सामाजिक वातावरण के नाम से जाना जाता है। यहाँ ज्ञानी का अर्थ अभ्यास और अनुभव से युक्त मानव और अज्ञानी का अर्थ अभ्यास और अनुभव के मार्ग पर चलने वाला मानव। इसी कारण शिक्षा को एक एसी विकासात्मक प्रक्रिया माना जा सकता है जिसमे मानव अभ्यास और अनुभव के सामाजिक वातावरण से युक्त मार्ग पर चलता रहता है। इस मार्ग पर चलने के लिए मानव जो क्रिया करता है उसे व्यवहार के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार से सामाजिक व्यवहार करता हुआ मानव अपने जीवन पथ पर अग्रसर होता रहता है, जो उसकी सभी अवस्थों में होता है। सामाजिक व्यवहार उसकी दूसरी आवश्यकता होती है, जिसका सबसे अधिक प्रयोग उसके जीवनकाल में किशोरावस्था में सबसे किया जाता है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता :–

किसी भी समाज के सर्वोच्तम विकास में उस समाज के रहने वाले लोगों की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए यह आवश्यक है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति ही उस समाज को अपने समस्त संसाधनों का उचित प्रयोग करते हुए सही लक्ष्य तक पहुंचा सकता है। आज सार्वभौमिक शिक्षा एवं अन्य सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप बडी संख्या में विद्यार्थी माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश पा रहें है, अतः माध्यमिक विद्यालयों के इन विद्यार्थियों को विद्यालयों में बनाये रखने और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए अभिभावक, अध्यापक एवं परिवेश द्वारा उन्हें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश पाने वाला विद्यार्थी अनेक शारीरिक, मानसिक बदलाव की अवस्था में होता है, वह अपने वर्तमान और भविष्य को लेकर काफी सोच–विचार करता है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक और अभिभावक अपने बच्चों के संवेगों को पहचाने और उनकी समस्या समाधान में सहायता करें।

आज के समय में रोजगार की समस्या, कठिन प्रतियोगिता, भौतिकता का आडम्बर, भ्रष्टाचार आदि सामाजिक जटिलताओं के कारण विद्यार्थी समाज व अन्य पक्षों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण बना लेता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने यह सिफारिश की थी कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थीयों को अलग–अलग व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए। माध्यमिक स्तर पर पहुंचने वाले बालक–बालिका कई सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक विभिन्नता लिए होते है ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि उनके बौद्धिक क्षमता, सामाजिक परिवेश और आर्थिक स्तर को ध्यान में रखते हुए उनका लक्ष्य एवं मार्ग निर्धारित किया जाना चाहिए। यह कार्य अभिभावक और अध्यापक दोनों के लिए अति महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी का सही समय पर सही तरीके से समायोजन नहीं किया जायेगा तो उसमें नकारात्मक दृष्टिकोण जन्म लेगा और वह समाज की मुख्य धारा से कटने लगेगा। कुमार एवं महेश्वरी ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त किया कि बुद्धि, सृजनात्मकता व शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित नहीं करती। इसी प्रकार महरोत्रा ने अपने शोध में पाया कि बुद्धि, सृजनात्मकता की शैक्षिक उपलब्धि से पिता का व्यवसाय सम्बन्धित था, शैक्षिक समायोजन सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बंधित था। जबकि पाण्डेय ने अपने अध्ययन में यह पाया कि शहरी क्षेत्रों ने बुद्धि, सृजनात्मकता के अधिक अंक प्राप्त किये एवं समायोजन स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध था। इसी प्रकार वीटी ने अपने अध्ययन में पाया कि 10 प्रतिशत प्रतिभाशाली

बालक बुद्धिमान व सृजनात्मकत थे जो चिन्हित, पलायनवादी, असुरक्षित, उदासीन व सामाजिक रूप से अनुपयुक्त थे।

उपरोक्त शोध निष्कर्षों के अध्ययन से स्पष्ट है कि बुद्धि, सृजनात्मकता जैसी अवधारणाएं बालक के विकास में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब विद्यार्थी बौद्धिक, सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाई के कारण असहज महसूस करता है, तो वह समाज के साथ उचित समायोजन नहीं कर पाता है। जिसके कारण शैक्षिक रूप से पिछड़ने लगता है, ऐसे में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बौद्धिक क्षमता, उपलब्धि प्रेरणा एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है।

1.4.2 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी :–

माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश एक परीक्षा नियामक संस्था है इसका मुख्यालय प्रयागराज में है यह दुनिया की सबसे बड़ी परीक्षा संचालित कराने वाली संस्था है इसे संक्षेप में यू०पी० बोर्ड के नाम से भी जाना जाता है। बोर्ड ने 10+2 शिक्षा प्रणाली अपनायी हुई है । यह 10वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए सार्वजनिक परीक्षा आयोजित करता है। माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश की स्थापना वर्ष 1921 में प्रयागराज में संयुक्त प्रान्त वैधानिक परिषद (यूनाइटेड प्रोविन्स लेजिस्लेटिव काउन्सिल) के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। इसने सबसे पहले वर्ष 1923 में परीक्षा आयोजित की थी यह भारत का प्रथम शिक्षा बोर्ड था जिसमें सर्वप्रथम 10+2 परीक्षा पद्धति अपनाई थी इस पद्धति के अन्तर्गत प्रथम सार्वजनिक (बोर्ड) परीक्षा का आयोजन 10 वर्षों की शिक्षा उपरान्त, जिसे हाईस्कूल परीक्षा एवं द्वितीय सार्वजनिक परीक्षा जिसे इण्टरमीडिएट परीक्षा कहते हैं।

माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० का मुख्य कार्य राज्य में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा आयोजित करना होता है इसके अलावा राज्य में स्थित नवीन विद्यालयों को मान्यता देना, हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर के लिए पाठ्यक्रम एवं पुस्तकें निर्धारित करना भी इसका प्रमुख कार्य है। इसके साथ ही यह बोर्ड एवं अन्य बोर्डों द्वारा ली गई परीक्षाओं को तुल्यता प्रदान करता है।

वर्तमान समय में सदा बढते रहने वाले कार्यभार को देखते हुए बोर्ड को पूरे क्षेत्र में अपनी गतिविधियों के लिए प्रयागराज स्थित केन्द्रिय कार्यालय से कई समस्याओं का सामना करना पडता था अतः बोर्ड के पांच क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना मेरठ (1973), वाराणसी (1978), बरेली (1981), प्रयागराज (1987), गोरखपुर (2016) में की गई। इनका कार्यालयों में क्षेत्रीय सचिवों की नियुक्ति की गई जिनके ऊपर प्रयाग राज स्थित मुख्यालय के सचिव प्रधान कार्यपालक के रूप में कार्यरत

रहते है। वर्तमान समय में लगभग 22000 माध्यमिक विद्यालय इस संस्था से सम्बद्ध हैं और लगभग 58 लाख विद्यार्थी पंजीकृत हैं।

प्रस्तुत शोध में कक्षा 11 के छात्र छात्राओं को अध्ययन के लिए लिया गया है क्योंकि इस कक्षा के छात्र–छात्राएं किशोरावस्था के होते हैं इस समस्या में किशोर–किशोरियों तथा छात्र–छात्राओं को पर्यायवाची के रूप में लिया गया है। विद्यार्थी शब्द का प्रयोग भी किशोर–किशोरियों के अर्थ में ही है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–11 के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

1.4.3 बुद्धि :–

बुद्धि शिक्षा के ही नहीं अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी समस्या को बिना किसी कठिनाई के विधिपूर्वक हल करना बुद्धिमत्ता का प्रतीक समझा जाता है। अनेक विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा अपने–अपने ढंग से दी है। टर्मन ने बुद्धि को अमूर्त कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता माना है। बन्डुरा ने इसे योग्यता ग्रहण करने के रूप में स्वीकार किया है। कुछ विद्वानों ने इसे सूक्ष्म विश्लेषण एवं अविष्कार करने की प्रवृत्ति के रूप में माना है।

अतः बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति अनुक्रिया करता है। वह स्वयं को समायोजित करता है तथा स्वयं वातावरण के अनुकूल बन जाता है।

बुद्धि की विशेषता यह भी है कि यह शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन दोनों को प्रभावित करती है। बुद्धि सर्वांगिक क्षमता है जिसमें चिन्तन तथा पर्यावरण आदि से समायोजन की क्षमता विकसित होती है। बुद्धि व्यक्ति के समायोजन में सहायता प्रदान करती है। जब व्यक्ति का सही समायोजन हो जाता है तो व्यक्ति संतुलित हो जाता है तथा सभी कार्यों को सही ढंग से करता है।

प्रायः देखा गया है कि यदि व्यक्ति संवेगात्मक स्थिति में है जैसे– भय, क्रोध आदि तो ऐसे समय में वह सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकता है। बुद्धि अधिक होने पर व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण कर लेता है। बुद्धि को केन्द्र बिन्दु मानकर, आत्मविश्वास, समन्वय, शैक्षिक उपलब्धि आदि के क्षेत्र में अनेक कार्य हुए है।

कुछ विद्वानों ने बुद्धि को समायोजन की योग्यता माना है, कुछ ने अधिगम की योग्यता, अमूर्त चिन्तन की योग्यता तथा कुछ विद्वानों ने बुद्धि को समस्या समाधान की योग्यता के रूप में स्वीकार किया है।

इस प्रकार कुछ विद्वानों ने बुद्धि को समायोजन के लिए आवश्यक माना है। जो व्यक्ति जितना अधिक अपने आपको वातावरण के प्रति समायोजित कर लेता है वह उतना ही बुद्धिमान कहा जाता है।

कार्यात्मक परिभाषाएँ :–

वेशलर "बुद्धि एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता हैं।[1]

राबिन्सन तथा राबिन्सन "बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के संपूर्ण वर्ग से होता है जो व्यक्ति में सूझ द्वारा समस्या–समाधान करने की क्षमताएँ, नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमताएँ, अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता तथा अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को दिखाता हैं।[2]

स्टोड्डार्ड "बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की क्षमता है जिनकी विशेषताएँ हैं–(1)कठिनता, (2)जटिलता, (3)अमूर्तता, (4) मितव्यय, (5) किसी लक्ष्य के प्रति अनुकूलनशीलता, (6)सामाजिक मान, (7) मौलिकता की उत्पत्ति और कुछ परिस्थिति में वैसी क्रियाओं को करना जो शक्ति की एकाग्रता तथा सांवेगिक कारकों का प्रतिरोध दिखाता है।"[3]

स्टर्न "नई परिस्थितियों में समायोजन की योग्यता ही बुद्धि है।[4]

टरमन "अमूर्त चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है।[5]

बकिंघम "बुद्धि अधिगम की योग्यता है।[6]

क्रूज "बुद्धि नई तथा भिन्न परिस्थितियों में समुचित रूप से समायोजन करने की योग्यता है।[7]

बिने " बुद्धि उचित ढंग से तर्क करने, उचित ढंग से निर्णय करने तथा आत्म विश्लेषण करने की क्षमता है।"[8]

बर्ट "बुद्धि अपेक्षाकृत नई परिस्थितियों में समायोजन करने की जन्मजात क्षमता है।"[9]

डियिरबोर्न "बुद्धि अधिगम करने की क्षमता अथवा अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता है।"[10]

---

[1] Wechsler,Measurement of Adult Intelligence,1939
[2] Robinson&Robinson,The Mentally Retarded Child,1965
[3] Stoddard,On the Meaning of Intelligence,1941
[4] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 269
[5] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 269
[6] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 269
[7] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 269
[8] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 269
[9] गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 तथा गुप्ता, डॉ0 अलका(2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान (सिद्धान्त एवं व्यवहार),पृ0247
[10]गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 तथा गुप्ता, डॉ0 अलका(2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान (सिद्धान्त एवं व्यवहार),पृ0247

जीन पियाजे ''बुद्धि वातावरण के साथ अनुकूलन करने की प्रक्रिया है।''[11]

पी0 ई0 वर्नन "बुद्धि को तीन अलग–अलग रूपों जननिक क्षमता, प्रेक्षित व्यावहार,तथा परीक्षण प्राप्तांक में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। जननिक क्षमता के रूप में बुद्धि को व्यक्ति का एक आनुवांशिक गुण माना जा सकता हैं। प्रेक्षित व्यवहार के रूप में बुद्धि वातावरण के साथ की जाने वाली अन्तक्रिया के दौरान व्यक्ति के द्वारा किये गये व्यवहार से परिलक्षित होती हैं। परीक्षण प्राप्तांक के रूप में बुद्धि वही है जो कोई बुद्धि परीक्षण मापता है।''[12]

बोरिंग "बुद्धि वही है जो बुद्धि परीक्षण मापता है।[13]

इबिंगहॉस "सीखने की क्षमता अथवा पूर्वअनुभव से लाभान्वित होने की क्षमता ही बुद्धि है।''[14]

कॉलविन " बुद्धि वह क्षमता है जो व्यक्ति को नई परिस्थितियों में समायोजित होने में सहायता करती है।''[15]

पिन्टनर "बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जो उसे जीवन की नई परिस्थितियों में समुचित रूप से समायोजित होने में सहायता करती है।[16]

मन "गतिशील अभियोजन की क्षमता ही बुद्धि है।[17]

रेक्सनाइट "बुद्धि वह सामान्य तत्त्व हैं जिसमें अन्तर्निहित हैं–हमारे विचारने की सभी प्रक्रियाएँ, सार्थक सम्बन्धों के प्रतिपादन की क्षमता तथा सार्थक सह–सम्बन्धों को उत्पन्न करने की शक्ति।''[18]

रेबर "बुद्धि की अभिव्यक्ति विवेक, कल्पना, सूझ तथा अनुकूलनीयता आदि योग्यताओं के रूप में होती हैं।[19]

हिलगार्ड "बुद्धि परीक्षण जो कुछ मापता हैं, वही बुद्धि हैं।[20]

स्पीयरमैन "बुद्धि सम्बन्धात्मक चिन्तन हैं।[21]

1.4.4 सृजनात्मकता :–

[11] गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 तथा गुप्ता, डॉ0 अलका(2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान (सिद्धान्त एवं व्यवहार),पृ0249
[12]गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 तथा गुप्ता, डॉ0 अलका(2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान (सिद्धान्त एवं व्यवहार),पृ0249
[13] गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 तथा गुप्ता, डॉ0 अलका(2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान (सिद्धान्त एवं व्यवहार),पृ0246
[14] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0199
[15] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0200
[16] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0200
[17] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0200
[18] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0201
[19] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0201
[20] पाण्डेय, कल्पलता तथा श्रीवास्तव ,एस0एस0 (2007) शिक्षा मनोविज्ञान (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि) पृ097
[21] पाण्डेय, कल्पलता तथा श्रीवास्तव ,एस0एस0 (2007) शिक्षा मनोविज्ञान (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि) पृ099

टादिकाल से समय से हमारे समाज में विद्यार्थियों द्वारा खोज करने, प्रयोग करने व सृजन करने की अपेक्षा कार्यों को एक निश्चित ढंग से करने पर अधिक बल दिया जाता है। माता–पिता वा शिक्षक विद्यार्थियों के विचार उत्पादों, कलाकृतियों, चित्रों आदि में प्रायः संशोधन किया करते है, जिससे वे अनजाने ही बालक या विद्यार्थियों के स्वयं के प्रयत्नों व सृजनशीलता या सृजनात्मकता को प्रभावित करते रहते है। जब विद्यार्थी शिक्षक या माता–पिता से थोड़ा हट के प्रश्न पूछते है तो शिक्षक या माता–पिता के उत्तर में अनेक बार उनकी भावनाएं आहत होती है। ऐसे में विद्यार्थी अपने विषय को शालीन ढंग से व्यक्त करने के तरीके खोजने के लिए सृजनात्मक चिन्तन करते हैं या तनाव पूर्ण परिस्थितियों में अपनी सृजन की क्षमता को प्रभावित कर लेते हैं व सुसमायोजित होने का प्रयत्न करते हैं।

सृजनात्मकता शब्द के समानर्थी कई शब्द प्रयोग किये जाते हैं। जैसे– उत्पादन, रचनात्मकता, विधायकता, मौलिकता तथा डिस्कवरी आदि। लेकिन अंग्रेजी में सृजनात्मकता को Creativity कहा जाता है।

कार्यात्मक परिभाषाएँ :–

क्रो एवं क्रो[22]–''सर्जनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''

ड्रैवडल[23]–''सर्जनात्मकता वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।''

स्टेन[24]–''जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सर्जनात्मकता कहलाता है।''

''किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन सृजनात्मकता है।''–**स्टेगनर एवं कावौस्की[25]**

''सृजनात्मक चिंतन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियों का निष्कर्ष नवीन, मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हो।'' सृजनात्मक चिंतक वह है जो नए क्षेत्र की खोज करता है, नए निरीक्षण करता है, नई भविष्यवाणियाँ करता है और नए निष्कर्ष निकालता है।''–**स्किनर[26]**

[22] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 382
[23] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 382
[24] पाठक, आर0पी0 (2011) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 382
[25] मंगल, एस0के0 (2019) शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 366
[26] मंगल, एस0के0 (2019) शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 366

''सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे वह कुछ ऐसी नई, चीजों, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है एवं जो पहले से उसे ज्ञात नहीं होता। यह एक काल्पनिक क्रिया या चिंतन संश्लेषण हो सकता है। इसमें गत अनुभूतियों से उत्पन्न सूचनाओं का नया पैटर्न और सम्मिश्रण सम्मिलित हो सकता है.....यह निश्चित रूप से उद्देश्यपूर्ण या लक्ष्य निर्देशित होता है न कि निराधार स्वप्नचित होता है.....यह वैज्ञानिक, कलात्मक या साहित्यिक रचना के रूप में भी हो सकता है।''—**Drevdohl**[27]

''नव परिवर्तन लाने, आविष्कार करने तथा तत्त्वों को इस ढंग से रखने की क्षमता जैसे वे पहले कभी रखे नहीं गए हों ताकि उनका महत्त्व या सुन्दरता बढ़ जाए, को ही सर्जनात्मकता की संज्ञा दी जाती है।—**HaiMowitz and Haimowitz**[28]

सर्जनात्मकता क्या है ?—पहली रचना यदि सर्जनात्मक कहलाती है तो उसे निश्चित रूप से नवीन होना चाहिए। दूसरी कसौटी मूल्य की है। एक सर्जनात्मक गुणक से ऐसे मूल्य का निश्चित रूप से पता चले जो सही हो या अच्छा हो।'' **Good and Brophy**[29]

''सर्जनात्मकता का तात्पर्य कला या यंत्र विज्ञान में नई आकृतियों को उत्पन्न करने अथवा नवीन विधियों द्वारा समस्याओं को हल करने की योग्यता से है।'' —**चैपलिन, 1975**[30]

''सर्जनात्मकता एक योग्यता है जो ऐसे परिणामों को उत्पन्न करती है जो नवीन के साथ—साथ उपयोगी या मूल्यवान होते हैं।'' —**क्रूक्स, 1991**[31]

''सर्जनात्मकता ऐसे कार्य को उत्पन्न करने की योग्यता है, जो नवीन (मौलिक अप्रत्याशित) तथा उपयुक्त (उपयोगी कार्य नियंत्रण) हो।''—**बैरोन, 2003**

''सर्जनात्मकता का तात्पर्य नवीन एवं मौलिक व्यवहार से है जिससे उपयुक्त एवं उत्पादक परिणाम उत्पन्न होता है।''—**ऑर्मरोड, 1995**[32]

''सर्जनात्मकता का तात्पर्य उन मानसिक प्रक्रियाओं से है जो ऐसे समाधानों, विचारों, संप्रत्ययवाद, कलात्मक आकारों, सिद्धान्तों अथवा उत्पादन में निहित होती है जो अपूर्व तथा नवीन होते हैं।''—**रेबर तथा रेबर, 2001**[33]

---

[27] Drevdohlil, Journal of Clinical Psychology, 1956, p. 22

[28] HaiMowitz and Haimowitz, Human Development, 1973, p. 197

[29] Good and Brophy, Educational Psychology : A Realistic Approach, 1980, p 520

[30] Chaplin, J.P. (1975) Dictionary of psychology pulished by dell publishing

[31] Crooks, R.L. (1991) Psychlogy Sience, behaviour and life holt, Rinehart and Winston.p.no.135

[32] Ormrod, J.E. (1995) Educational Psychology: Principles and Aplications. Merrill Columbus, Ohio

[33] Reber, A.S.and Reber, E. (2001) Penguin Dictionary of psychology, p.163

''सर्जनात्मकता वास्तव में चिंतन का एक रूप है। चिंतन के मुख्य दो रूप हैं जिन्हें अभिसारी तथा अपसारी चिंतन कहते हैं। इसी अपसारी चिन्तन को सर्जनात्मकता कहा जाता है।''—**Guilford, 1967**[34]

''सर्जनात्मक चिंतन या अपसारी चिंतन में व्यक्ति किसी समस्या का समाधान करने हेतु भिन्न–भिन्न रूपो से सोच–विचार करता है।''—**Morgan, 1998**[35]

''सृजनशीलता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है।''—**कोल और ब्रूस**[36]

''सृजनशीलता वह विशेषता है जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करती है। यह नवीन वस्तु सम्पूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया है।'' —**डीहान तथा हेबिंगहर्स्ट**[37]

''प्रस्तुत समस्याओं के समाधान के लिए नवीन समाधान उत्पन्न करने की योग्यता को सृजनात्मकता कहते हैं।''—**रैथम, 1984**[38]

''उपलब्ध तथ्यों को एक नवीन रूप में संयोजित कर देने या विलक्षण निष्कर्ष प्रस्तुत कर देने की योग्यता को सृजनात्मकता कहते हैं।''—**J.M. Darley, 1981**[39]

''किसी समस्या के लिए मौलिक, व्यवहारिक उत्तर तथा समाधान प्रस्तुत करने के व्यवहार की व्याख्या के लिए सृजनात्मकता का उपयोग किया जाता है।'' —**बोर्न और एक्सट्रेण्ड, 1982**[40]

''सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नये सम्बन्धों का ज्ञान होता है, इसकी उत्पत्ति में चिंतन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न होते हैं।''—**H.J. Eysenck, 1972**[41]

''सृजनात्मकता से कुछ नई और भिन्न चीज का निर्माण होता है, अतः व्यक्ति के उत्पादन या उसकी रचना से सृजनात्मकता का मापन किया जा सकता है। परन्तु हमेशा यह आवश्यक नहीं होता है कि सृजनात्मकता से उत्पादन ही होता है।''

---

[34] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 249
[35] सुलैमान, डॉ0 मुहम्मद (2014) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 250
[36] Cole, Lawrence and Bruce, w.f. (1950) Educational Psychology
[37] गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 तथा गुप्ता, डॉ0 अलका(2019)उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान (सिद्धान्त एवं व्यवहार),पृ0 602
[38] श्रीवास्तव, डॉ0 डी0 एन0 तथा वर्मा, डॉ0 प्रीति (2018), पृ0 679
[39] श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 तथा वर्मा, डॉ0 प्रीति (2018), पृ0 679
[40] श्रीवास्तव, डॉ0 डी0 एन0 तथा वर्मा, डॉ0 प्रीति (2018), पृ0 679
[41] Eysenck, H. J. (1972) Encyclopedia of Psychology; London Search Press

''क्रियात्मकता के धरातल पर एक अद्वितीय सम्बन्धात्मक उत्पाद माना है जो कि एक ओर व्यक्ति की अद्वितीयता और दूसरी ओर वस्तुओं, घटनाओं, व्यक्तियों या उसके जीवन की परिस्थितियों द्वारा निर्मित होता है।''—**Rogers**[42]

स्टीन[43] ने किसी प्रक्रिया को सृजनात्मकता तभी माना है जब ''वह अद्वितीय कार्य में फलित होती है तथा जिसे काल के किसी बिन्दु पर व्यक्तियों के समूह द्वारा प्राप्य, लाभदायक एवं संतुष्टिदायक स्वीकार किया जाता है।''

''सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्वों का नवीन सम्मिश्रण बनाना अन्तर्निहित है। ये मिश्रण पूर्व निश्चित मानदण्डों या आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं या किसी न किसी तरह उपयोगी होते हैं। यह साहचर्य के तत्वों का सम्मिलन है जो सामान्य सम्मिलन से अलग हटकर एवं दूरस्थ होता है। सामान्य से यह सम्मिलन जितना दूर होगा, उतना ही वह प्रक्रिया अथवा समाधान सृजनात्मक होगा।''—**Mednick**[44]

''नवीन विचारों या परिकल्पनाओं का निमार्ण करने, उनका परीक्षण करने तथा परिणामों का सम्प्रेषण करने की प्रक्रिया सर्जनात्मकता कहलाती है।''—**यामामेतो, 1964**[45]

''प्रासंगिकता के किसी मानदंड के अनुरूप अनेक अनोखे संज्ञानात्मक सहचरों का निर्माण करने या उन्हें उत्पन्न करने की योग्यता सृजनात्मकता है। —**वेलेक तथा कोगल, 1966**[46]

''सृजनात्मकता समस्याओं के प्रति संवेदनशील होने, अनेक भिन्न, आनुवांशिक व नवीन समाधान खोजने के लिए चिन्तन करने तथा चिन्तन–परिणामों को सम्प्रेषित करने की प्रक्रिया है।''—**प्रो0 करूणा शंकर मिश्र**[47]

''**हालमैन**[48] के विचार में सृजनात्मक प्रक्रिया के उत्पाद को मौलिक होना चाहिए वा इसमें चार गुण नवीनता, असंभाव्यता, अतुलनीयता व आश्चर्य होने चाहिए।

1.4.5 शैक्षिक उपलब्धि :—

[42] पाण्डेय, कल्पलता तथा श्रीवास्तव, एस0एस0 (2007) शिक्षा मनोविज्ञान (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि) पृ0 127
[43] पाण्डेय, कल्पलता तथा श्रीवास्तव ,एस0एस0 (2007) शिक्षा मनोविज्ञान (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि) पृ0 126
[44] पाण्डेय, कल्पलता तथा श्रीवास्तव, एस0एस0 (2007) शिक्षा मनोविज्ञान (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि)
[45] मिश्र, के0एस0 (2014) मनोविज्ञान के क्षितिज, पृ0 113
[46] मिश्र, के0एस0 (2014) मनोविज्ञान के क्षितिज, पृ0 114
[47] मिश्र, के0एस0 (2014) मनोविज्ञान के क्षितिज, पृ0 114
[48] मिश्र, के0एस0 (2014) मनोविज्ञान के क्षितिज, पृ0 114

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य गोण्डा जनपद के माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणाम से है।

चार्ल्स ई.स्किनर के अनुसार "शैक्षिक कार्य प्रक्रिया अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों का कार्य के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है।''

हॉलक्विट्स के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि वह परिणाम है जो विद्यार्थियों को आगे करने के लिये प्रेरित एवं उत्साहित करती है।"

प्रेसी रॉबिन्सन व हॉरक्स "उपलब्धि परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप और सीमा का माप करने के लिये किया जाता है।"

गैरीसन –"उपलब्धि परीक्षा बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विषिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन करती है।''

थार्नडाईक व हेगन "जब हम उपलब्धि परीक्षा का प्रयोग करते हैं तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त होता हैं।''

इबेव " उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान कुशलता या क्षमता का मापन करता है।''

फ्रीमैन ''उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो एक विशेष विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कौशल का मापन करता है।"

डम्बल '' विद्यार्थियों के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता एवं क्षमता का मापन करने हेतु अपनाई गई विधि पक्रिया, व्यूह उपलब्धि परीक्षण कहलाता है तथा इस परीक्षण के माध्यम से प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष शैक्षिक उपलब्धि के अतर्गत आते हैं।''

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

volution: A Global Crises . Edited by Phillip G. Altbach.Delhi; Lalvani Publishing House. 2022.

7. Shah , B.V " Social Change and college students of Gujrat. Baoroda: The Maharaja Sayajirao University of baroda,2012.
8. Potsangbum, Koni and lawani, B.t op. cit.

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/16

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सौमित्र शुक्ल और प्रो0 शिवम श्रीवास्तव

For publication of research paper title

"गोण्डा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि और सृजनात्मकता के सम्बन्ध का प्रभाव"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com